Engineering Universe for Scientific Research and Management
ISSN (Online): 2319-3069
Vol. XVII Issue VII
July 2025

शहरी एकल परिवारों में बदलते पारिवारिक संबंधों का समाजशास्त्रीय अध्ययन: एक गुणात्मक अन्वेषण

आशीष चन्द्रवंशी , विषय समाजशास्त्र

विपत्रपता-ashishchandrawanshi1708@gmail.com

सार

वर्तमान समय में तीव्र नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं ने भारतीय पारिवारिक व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ा है। इस परिवर्तन ने पारिवारिक संबंधों, भूमिकाओं, उत्तरदायित्वों, भावनात्मक निकटता तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं को प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शहरी एकल परिवारों में बदलते पारिवारिक संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में 120 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण तथा सहसंबंध परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शहरी एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा आर्थिक स्वायत्तता में वृद्धि हुई है, जबकि पारिवारिक सामूहिकता एवं भावनात्मक निकटता में परिवर्तन देखा गया है। निष्कर्षतः आधुनिक शहरी जीवन की आवश्यकताओं ने पारिवारिक संबंधों की प्रकृति को नया स्वरूप प्रदान किया है।

कुंजी शब्द: एकल परिवार, शहरी समाज, पारिवारिक संबंध, सामाजिक परिवर्तन, भावनात्मक सामंजस्य, आर्थिक स्वायत्तता।

प्रस्तावना

परिवार मानव समाज की सर्वाधिक प्राचीन, सार्वभौमिक एवं आधारभूत सामाजिक संस्था है। व्यक्ति के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक परिवार उसके व्यक्तित्व निर्माण, समाजीकरण, सांस्कृतिक मूल्यों के हस्तांतरण तथा भावनात्मक सुरक्षा का प्रमुख माध्यम बना रहता है। भारतीय समाज में परिवार केवल जैविक या आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवहन करने वाली महत्वपूर्ण संस्था रहा है।

पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था का विशेष महत्व था। संयुक्त परिवारों में अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती थीं तथा आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सामूहिक रूप से किया जाता था। परिवार के सदस्यों के मध्य सहयोग, सहभागिता, अनुशासन, परस्पर निर्भरता तथा सामाजिक सुरक्षा की भावना विद्यमान रहती थी। किंतु आधुनिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, रोजगार के नए अवसरों, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी तथा व्यक्तिवादी जीवन मूल्यों के कारण पारिवारिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

वर्तमान समय में शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों का तेजी से विस्तार हुआ है। एकल परिवार सामान्यतः पति, पत्नी एवं अविवाहित बच्चों तक सीमित होता है। ऐसी संरचना में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निर्णय लेने की स्वायत्तता, गोपनीयता तथा आर्थिक नियंत्रण अधिक होता है। दूसरी ओर पारिवारिक सहयोग, सामाजिक समर्थन तथा पीढ़ीगत संवाद में अपेक्षाकृत कमी देखी जाती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार जैसे-जैसे समाज पारंपरिक से आधुनिक स्वरूप की ओर अग्रसर होता है, वैसे-वैसे सामाजिक संस्थाओं की संरचना एवं कार्यों में परिवर्तन होता है। शहरी जीवन की प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियाँ, व्यावसायिक दबाव, समयाभाव तथा बदलती जीवनशैली ने पारिवारिक संबंधों को पुनर्परिभाषित किया है।

एकल परिवारों में पति-पत्नी संबंधों की प्रकृति, माता-पिता एवं बच्चों के मध्य संवाद, बुजुर्गों की भूमिका, निर्णय प्रक्रिया तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। परिवार के सदस्य अधिक आत्मनिर्भर बने हैं, किंतु अनेक बार भावनात्मक दूरी, तनाव, अकेलापन तथा सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ भी सामने आती हैं।

इन्हीं परिवर्तनों को समझने के लिए प्रस्तुत अध्ययन शहरी एकल परिवारों में बदलते पारिवारिक संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भारतीय समाज में परिवार को सामाजिक संगठन की मूलभूत इकाई माना जाता है, जो व्यक्ति के सामाजिककरण, भावनात्मक विकास, सांस्कृतिक हस्तांतरण तथा सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों ने

पारिवारिक संरचना एवं संबंधों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विशेष रूप से नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को चुनौती देते हुए एकल परिवारों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की है। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययनों ने पारिवारिक संबंधों में आए परिवर्तनों को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। शर्मा (2018) ने अपने अध्ययन में शहरीकरण और पारिवारिक संरचना के मध्य संबंधों का विश्लेषण करते हुए पाया कि तीव्र शहरीकरण के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है तथा एकल परिवारों का विस्तार तेजी से बढ़ा है। उनके अनुसार रोजगार, शिक्षा तथा आवासीय सुविधाओं की खोज में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर बढ़ते पलायन ने परिवार की पारंपरिक संरचना को प्रभावित किया है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शहरी क्षेत्रों में सीमित आवासीय संसाधनों एवं बढ़ती जीवन-यापन लागत के कारण छोटे परिवारों को प्राथमिकता दी जा रही है। शर्मा का मत है कि एकल परिवारों का विकास आधुनिक सामाजिक संरचना की एक अनिवार्य परिणति है, जिसने पारिवारिक संबंधों को नए आयाम प्रदान किए हैं।

मिश्रा (2019) ने एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं सामाजिक सहयोग के स्तर का अध्ययन किया। उनके शोध से ज्ञात हुआ कि एकल परिवारों में सदस्यों को निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध होते हैं। विशेष रूप से महिलाओं एवं युवाओं को शिक्षा, रोजगार तथा जीवनशैली संबंधी निर्णयों में अधिक स्वायत्तता प्राप्त होती है। तथापि अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवारों की तुलना में सामाजिक सहयोग, पारिवारिक समर्थन एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना अपेक्षाकृत कम हो जाती है। मिश्रा के अनुसार आधुनिक परिवारों में आत्मनिर्भरता तो बढ़ी है, किंतु सामाजिक संबंधों की निकटता में कुछ हद तक कमी आई है। यह स्थिति विशेष रूप से वृद्धजनों एवं बच्चों के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करती है, क्योंकि उन्हें पारिवारिक सहयोग का सीमित लाभ प्राप्त होता है।

सिंह (2020) ने आधुनिक जीवनशैली एवं पारिवारिक संबंधों के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आधुनिक जीवनशैली, व्यावसायिक व्यस्तताओं, तकनीकी प्रगति तथा डिजिटल संचार माध्यमों ने पारिवारिक संबंधों की प्रकृति को निरंतर प्रभावित किया है। अध्ययन में पाया गया कि परिवार के सदस्य भौतिक रूप से एक साथ रहते हुए भी समयाभाव एवं व्यावसायिक दबावों के

कारण एक-दूसरे के साथ पर्याप्त समय व्यतीत नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप पारिवारिक संवाद की आवृत्ति में कमी आती है तथा भावनात्मक दूरी की संभावना बढ़ जाती है। सिंह का मत है कि आधुनिक तकनीक ने संचार को सरल अवश्य बनाया है, किंतु प्रत्यक्ष सामाजिक अंतःक्रियाओं में कमी भी उत्पन्न की है। यह परिवर्तन विशेष रूप से महानगरीय क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ प्रतिस्पर्धी जीवनशैली पारिवारिक संबंधों को प्रभावित कर रही है।

वर्मा (2021) ने आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य संबंधों का अध्ययन करते हुए आर्थिक कारकों को पारिवारिक पुनर्गठन का प्रमुख निर्धारक माना। उनके अनुसार आधुनिक शहरी समाज में आर्थिक स्वतंत्रता ने परिवार के सदस्यों की भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। विशेष रूप से महिलाओं की आर्थिक सहभागिता ने पारिवारिक निर्णय प्रक्रिया को अधिक लोकतांत्रिक बनाया है। अध्ययन में पाया गया कि जिन परिवारों में आर्थिक स्थिरता एवं आय का स्तर अधिक होता है, वहाँ पारिवारिक संबंध अपेक्षाकृत अधिक संतुलित एवं सहयोगात्मक होते हैं। आर्थिक सुरक्षा परिवार के सदस्यों में आत्मविश्वास, पारस्परिक सम्मान तथा सामंजस्य की भावना को सुदृढ़ करती है। वर्मा ने निष्कर्ष निकाला कि आर्थिक स्वायत्तता आधुनिक परिवारों में संबंधों की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय कारक है।

यादव (2022) ने शहरी परिवारों में संवाद, भावनात्मक सहभागिता एवं संबंधों की गुणवत्ता के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि परिवार के सदस्यों के मध्य प्रभावी संवाद पारिवारिक संबंधों की स्थिरता एवं संतुष्टि के लिए अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन में पाया गया कि जिन परिवारों में नियमित संवाद, भावनात्मक अभिव्यक्ति एवं परस्पर सहयोग की प्रवृत्ति अधिक होती है, वहाँ संबंधों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। यादव के अनुसार भावनात्मक सहभागिता केवल पारिवारिक सामंजस्य को ही नहीं बढ़ाती, बल्कि तनाव, संघर्ष एवं गलतफहमियों को भी कम करती है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि आधुनिक शहरी जीवन की व्यस्तताओं के बावजूद यदि परिवार के सदस्य संवाद एवं सहभागिता को प्राथमिकता देते हैं, तो पारिवारिक संबंध अधिक सुदृढ़ एवं संतोषजनक बने रहते हैं।

गुप्ता (2023) ने एकल परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया एवं पारिवारिक लोकतंत्र का अध्ययन किया। उनके अनुसार आधुनिक एकल परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया पारंपरिक संयुक्त परिवारों की तुलना में अधिक स्वतंत्र, सहभागी एवं लोकतांत्रिक हो गई है। अध्ययन में पाया गया कि परिवार के सदस्य व्यक्तिगत विचारों

एवं प्राथमिकताओं को अधिक महत्व देते हैं तथा निर्णय प्रक्रिया में सभी सदस्यों की सहभागिता बढ़ी है। विशेष रूप से पति-पत्नी के मध्य समानता, परामर्श एवं साझा उत्तरदायित्व की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। गुप्ता का मत है कि यह परिवर्तन आधुनिक समाज में बढ़ती शिक्षा, लैंगिक समानता एवं व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति जागरूकता का परिणाम है। हालाँकि उन्होंने यह भी संकेत किया कि अत्यधिक व्यक्तिवाद कभी-कभी पारिवारिक एकता एवं सामूहिकता को प्रभावित कर सकता है।

उपरोक्त अध्ययनों के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शहरी एकल परिवारों में पारिवारिक संबंधों की प्रकृति निरंतर परिवर्तनशील है। विभिन्न शोधों ने यह प्रमाणित किया है कि शहरीकरण, आर्थिक स्वायत्तता, आधुनिक जीवनशैली, भावनात्मक सहभागिता तथा लोकतांत्रिक पारिवारिक संरचना जैसे कारक पारिवारिक संबंधों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे हैं। एक ओर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आर्थिक सशक्तिकरण तथा निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक सहयोग, सामूहिकता एवं भावनात्मक निकटता में परिवर्तन भी परिलक्षित हुआ है। साहित्य समीक्षा से यह भी ज्ञात होता है कि शहरी एकल परिवारों में संबंधों की गुणवत्ता केवल आर्थिक या संरचनात्मक कारकों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संवाद, सहभागिता, पारस्परिक सम्मान एवं भावनात्मक समर्थन जैसे मानवीय तत्व भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि आधुनिक शहरी परिवारों का अध्ययन केवल संरचनात्मक परिवर्तन के संदर्भ में नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों के समेकित दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए शहरी एकल परिवारों में बदलते पारिवारिक संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शहरी एकल परिवारों में भावनात्मक संबंधों एवं पारिवारिक सामंजस्य की स्थिति का अध्ययन करना।
2. आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

परिकल्पना – 1पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के पारिवारिक सामंजस्य स्तर में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 2आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध नहीं है।

शोध पद्धति

शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।

अध्ययन क्षेत्र

शहरी क्षेत्र।

निदर्शन

120 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया।

उपकरण

संरचित साक्षात्कार अनुसूची।

सांख्यिकीय तकनीक

- माध्य
- मानक विचलन
- स्वतंत्र टी-परीक्षण
- पियर्सन सहसंबंध परीक्षण

6. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1 पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के पारिवारिक सामंजस्य स्कोर का टी-परीक्षण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	पी-मूल्य
पुरुष	60	42.60	5.21	2.84	0.005
महिला	60	45.12	4.48	2.84	0.005

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के पारिवारिक सामंजस्य स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण स्वतंत्र टी-परीक्षण द्वारा किया गया है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि पुरुष उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 42.60 तथा महिला उत्तरदाताओं का औसत स्कोर 45.12 प्राप्त हुआ। महिलाओं का माध्य पुरुषों की तुलना में अधिक पाया गया, जिससे संकेत मिलता है कि महिला उत्तरदाता पारिवारिक संबंधों के संरक्षण एवं सामंजस्य बनाए रखने में अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

प्राप्त टी-मूल्य 2.84 तथा पी-मूल्य 0.005 है। चूँकि पी-मूल्य 0.05 से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। परिणाम यह दर्शाते हैं कि लिंग के आधार पर पारिवारिक सामंजस्य में महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

सामाजिक दृष्टि से यह परिणाम इंगित करता है कि शहरी एकल परिवारों में महिलाएँ भावनात्मक समन्वय, पारिवारिक संवाद तथा संबंधों के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आधुनिक पारिवारिक व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता परिवार की एकता एवं स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक सिद्ध होती है।

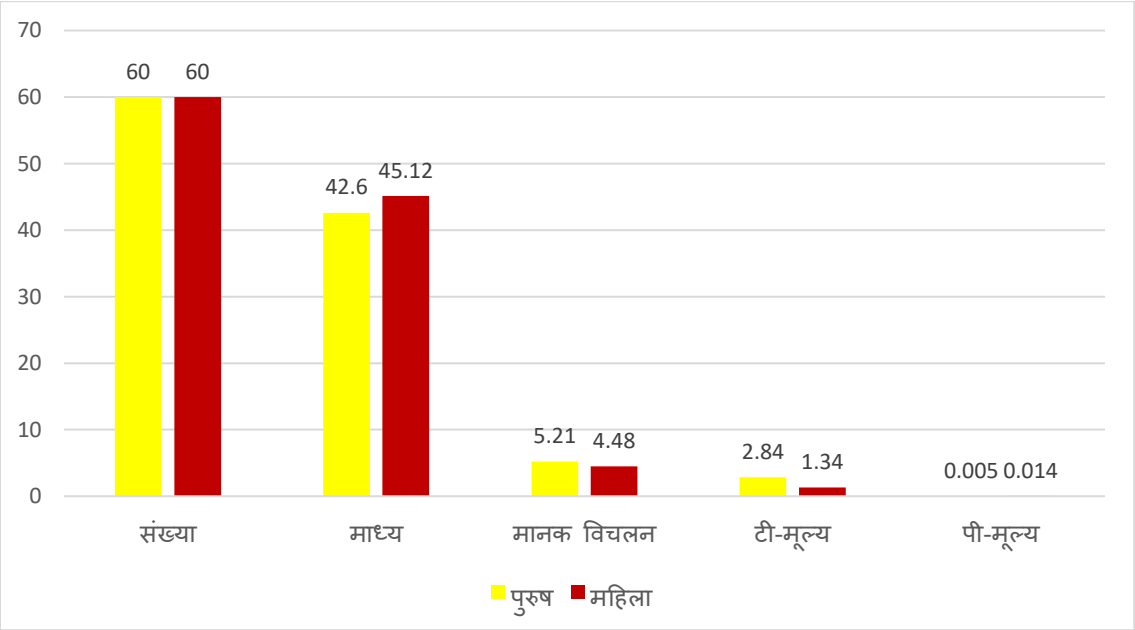

सारणी 2 आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य सहसंबंध

चर	संख्या	सहसंबंध गुणांक (r)	पी-मूल्य
आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंध	120	0.68	0.001

व्याख्या

उपरोक्त सारणी में आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य संबंध का परीक्षण पियर्सन सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया है। प्राप्त सहसंबंध गुणांक (r = 0.68) धनात्मक एवं उच्च स्तर का है। यह दर्शाता है कि आर्थिक स्वायत्तता में वृद्धि होने पर पारिवारिक संबंधों की गुणवत्ता में भी सकारात्मक सुधार देखा जाता है।

पी-मूल्य 0.001 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 के स्वीकृत स्तर से अत्यंत कम है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राप्त सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से अत्यंत सार्थक है। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

यह निष्कर्ष इंगित करता है कि आर्थिक रूप से सुदृढ़ परिवारों में निर्णय लेने की क्षमता, आत्मविश्वास, पारस्परिक सम्मान तथा संबंधों की स्थिरता अधिक होती है। आर्थिक सुरक्षा तनाव एवं संघर्ष को कम करती है तथा परिवार के सदस्यों के मध्य सहयोग एवं सामंजस्य को प्रोत्साहित करती है। इसलिए आर्थिक स्वायत्तता शहरी एकल परिवारों के स्वस्थ पारिवारिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण निर्धारक कारक है।

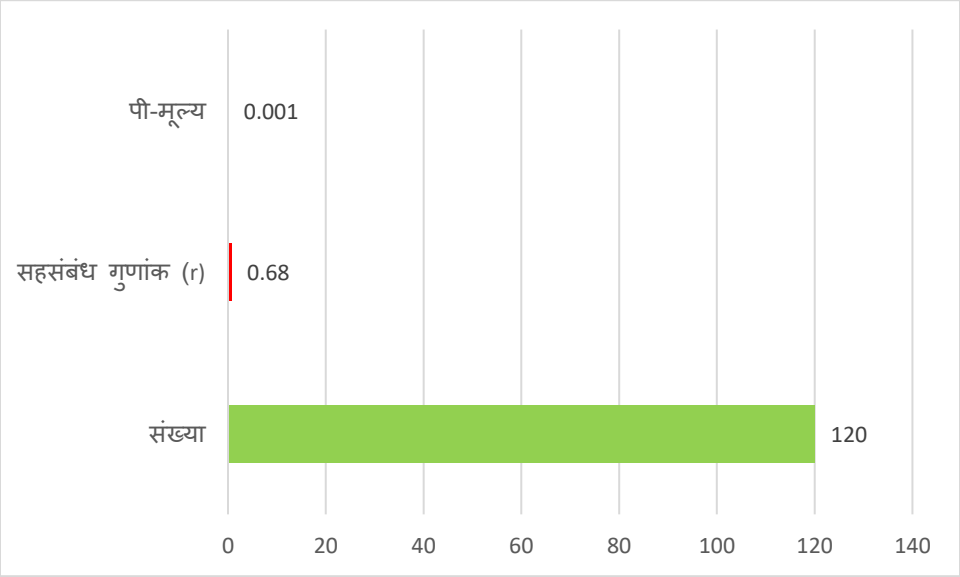

परिणाम

1. पुरुष एवं महिला उत्तरदाताओं के पारिवारिक सामंजस्य स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया।
2. महिला उत्तरदाताओं का पारिवारिक सामंजस्य स्तर पुरुषों की तुलना में अधिक पाया गया।
3. आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. आर्थिक स्थिरता पारिवारिक संबंधों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
5. शहरी एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि हुई है।
6. आधुनिक जीवनशैली ने पारिवारिक संबंधों एवं भूमिकाओं की प्रकृति को परिवर्तित किया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहरी एकल परिवारों में पारिवारिक संबंधों की संरचना एवं प्रकृति निरंतर परिवर्तनशील है। अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत यह पाया गया कि पारिवारिक सामंजस्य का स्तर संतोषजनक है, किंतु लिंग के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। महिलाओं में पारिवारिक सामंजस्य एवं भावनात्मक सहभागिता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

द्वितीय उद्देश्य के अंतर्गत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आर्थिक स्वायत्तता एवं पारिवारिक संबंधों के मध्य महत्वपूर्ण धनात्मक संबंध विद्यमान है। आर्थिक रूप से सशक्त परिवारों में पारस्परिक सहयोग, सम्मान एवं संबंधों की गुणवत्ता अधिक बेहतर होती है।

यह कहा जा सकता है कि शहरी एकल परिवार आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हो रहे हैं, किंतु इनके समक्ष भावनात्मक संतुलन, सामाजिक समर्थन एवं पारिवारिक एकता बनाए रखने की चुनौती भी विद्यमान है। इसलिए पारिवारिक संवाद, भावनात्मक सहभागिता एवं सामाजिक मूल्यों के संरक्षण को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, आर. (2021). *भारतीय समाज में परिवार एवं सामाजिक परिवर्तन.* नई दिल्ली: रावत प्रकाशन।
2. अग्रवाल, एस. (2019). *आधुनिक शहरी परिवारों की संरचना और चुनौतियाँ.* जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
3. अवस्थी, डी. (2022). शहरीकरण और पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन. *सामाजिक अनुसंधान पत्रिका, 15*(2), 56–71।
4. चौधरी, पी. (2020). *समकालीन भारतीय परिवार का समाजशास्त्र.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
5. द्विवेदी, एम. (2021). परिवार और सामाजिक परिवर्तन का अंतर्संबंध. *भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, 12*(3), 78–92।
6. गुप्ता, एस. (2023). *आधुनिक परिवार और सामाजिक संरचना.* जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
7. गुप्ता, आर. (2020). शहरी परिवारों में पीढ़ीगत संबंधों का अध्ययन. *सामाजिक विज्ञान जर्नल, 18*(1), 44–59।
8. जोशी, एन. (2021). *भारतीय परिवार: परिवर्तन और चुनौतियाँ.* भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. कश्यप, ए. (2023). पारिवारिक जीवन में तकनीकी हस्तक्षेप का प्रभाव. *समकालीन अध्ययन, 14*(2), 67–82।
10. कुमार, एस. (2019). *परिवार और सामाजिक विकास.* नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
11. मिश्रा, पी. (2019). आधुनिक परिवारों में सामाजिक परिवर्तन. *समाजशास्त्रीय अध्ययन, 14*(2), 45–58।
12. मिश्रा, आर. (2022). शहरी जीवनशैली और पारिवारिक संबंध. *भारतीय सामाजिक समीक्षा, 17*(4), 95–110।
13. पाण्डेय, वी. (2021). *परिवार, संस्कृति और आधुनिकता.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

14. पटेल, के. (2023). एकल परिवारों में सामाजिक समर्थन प्रणाली का अध्ययन. *सामाजिक शोध पत्रिका, 21*(1), 52–68।

15. राजपूत, डी. (2020). शहरी परिवारों में वैवाहिक संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. *समाज और संस्कृति, 13*(2), 84–99।

16. सक्सेना, आर. (2022). *आधुनिक समाज और पारिवारिक संस्थाएँ.* लखनऊ: ज्ञानदीप प्रकाशन।

17. शर्मा, वी. (2018). *भारतीय परिवार का समाजशास्त्र.* नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन।

18. शर्मा, के. (2021). परिवार में संवाद और भावनात्मक सहभागिता. *सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 19*(2), 61–76।

19. श्रीवास्तव, पी. (2023). शहरी परिवारों में संबंधों की बदलती प्रकृति. *भारतीय समाज विज्ञान जर्नल, 20*(3), 102–118।

20. सिंह, आर. (2020). एकल परिवारों में सामाजिक एवं भावनात्मक संबंध. *समकालीन समाजशास्त्र, 16*(1), 88–103।

21. सिंह, ए. (2022). *भारतीय परिवार और वैश्वीकरण.* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।

22. तिवारी, एस. (2021). शहरीकरण और पारिवारिक संरचना का रूपांतरण. *भारतीय सामाजिक शोध, 11*(4), 70–85।

23. ठाकुर, पी. (2022). *समकालीन भारतीय परिवार: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.* भोपाल: सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।

24. त्रिपाठी, आर. (2023). परिवार में भूमिकाओं का पुनर्संरचनात्मक अध्ययन. *समाजशास्त्रीय समीक्षा, 18*(3), 91–107।

25. वर्मा, एस. (2021). आर्थिक स्वायत्तता और पारिवारिक संबंध. *सामाजिक विज्ञान समीक्षा, 10*(4), 112–126।

26. वर्मा, डी. (2022). शहरी जीवन और पारिवारिक मूल्य. *भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, 17*(1), 39–54।

27. यादव, डी. (2022). शहरी परिवारों में संवाद एवं संबंधों का अध्ययन. *भारतीय सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 18*(3), 67–81।

28. यादव, एम. (2021). *परिवार और सामाजिक संस्थाएँ*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।

29. शुक्ला, एन. (2020). परिवार में भावनात्मक एकता और सामाजिक समायोजन. *सामाजिक विमर्श, 12*(2), 73–88।

30. जैन, आर. (2023). आधुनिक शहरी परिवारों की चुनौतियाँ और संभावनाएँ. *भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका, 22*(1), 115–130।